

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-८५

दिनांक- मंगलवार, १५ नवम्बर, २०२२



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 28.6 एवं 12.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 97 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 45 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.7 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.5 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.7 घंटा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 17.5 एवं दोपहर में 26.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(16-20 नवम्बर, 2022)**

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 16-20 नवम्बर, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस दौरान अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 12 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन 4 से 6 कि०मी० प्रति घंटा की रफतार से पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- मौसम के अनुकूल रहने की संभावना को देखते हुए तैयार धान की कटनी तथा दौनी के कार्य को उच्च प्राथमिकता दे कर पूरा करने का प्रयास करें।
- गेहूँ की बुआई के लिए तापमान तथा अन्य मौसमीय परिस्थितियाँ अनुकूल है। किसान भाई सिंचित एवं समयकालीन गेहूँ की किस्मों की बुआई प्राथमिकता से करें। खेत की तैयारी के समय 150-200 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बुआई हेतु एच० डी० -2967, एच० डी० -2733, एच० डी० -2824, डी० डब्लू० 187, डी० डब्लू० 39, एच० यु० डब्लू० 468, सी० बी० डब्लू० 38 किस्म उत्तर बिहार के लिए अनुषंसित है। बीज को बुआई से पहले 2.5 ग्राम बेबीस्टीन की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रिल से पंक्ति में बुआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें।
- चना की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉस्फोरस, 20 किलोग्राम पोटास एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-256, के०पी०जी०-59(उदय) एवं पूसा 372 अनुषंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 8 मि०ली० प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पॉच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें।
- आलू की रोपाई प्राथमिकता से करें। कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू- 1, राजेन्द्र आलू- 2 तथा राजेन्द्र आलू-3 इस क्षेत्र के लिए अनुषंसित किस्में हैं। बीज दर 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। पंक्ति से पंक्ति की दुरी 50-60 से०मी० एवं बीज से बीज की दुरी 15-20 से०मी० रखें। आलू को काट कर लगाने पर 2 से 3 स्वस्थ आँख वाले टुकड़े को उपचारित कर 24 घंटे के अन्दर लगावे। बीज को एगलॉल या एमीसान के 0.5 प्रतिषत घोल या डाइथेन एम० 45 के 0.2 प्रतिषत घोल में 10 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करें। समूचा आलू (20-40 ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है। खेत की जुताई में कम्पोस्ट 200-250 क्विंटल, 75 किलोग्राम नेत्रजन, 90 किलोग्राम फास्फोरस एवं 100 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- पिछेती धान की कटाई कर राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल, राजेन्द्र सुफलाम एवं राजेन्द्र राई पिछेती की बुआई कर सकते हैं। राई-तोरी-सरसों की फसल जो 15 से 20 दिनों की हो गयी है उसमें निकौनी तथा बछनी कर पौधे से पौधे की दुरी 12-15 से०मी० रखें।
- मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की 20 से 25 दिनों की फसलों में कजरा (कटुआ) पिल्लू की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन फसलों के छोटे-छोटे उग रहे पौधों पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है। यह पिल्लू अधिकतर दिन में भूमि के अन्दर दरारों में या ढेलों के नीचे छिपी रहती है और इन कटी शाखाओं को जमीन के अन्दर ले जा कर दिन में भी खाती है। यह खाती कम नुकसान अधिक करती है। इसकी रोकथाम के लिए खेत की सिंचाई करने पर इसके पिल्लू दरार से बाहर निकलते हैं एवं पक्षियों द्वारा धिकार हो जाते हैं। खड़ी फसलों में बीच-बीच में घास-फूस के छोटे-छोटे ढेर शाम के समय लगा देते हैं। रात्री में यह कीट फसलों को खाकर इसी ढेर में छिप जाती है। किसान सुबह में छिपे पिल्लू को चुनकर नष्ट कर दें। अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 ई०सी० दवा का 2.5 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- विगत माह बोयी गई मटर, राजमा, लहसून एवं सब्जियों वाली फसलें- बैंगन, टमाटर, मिर्च, पत्तागोभी एवं फूलगोभी में निकाई गुराई तथा आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की फसलों की निगरानी करें। अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 ई०सी० दवा का 2.5 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- बैंगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकटा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 ई०सी०/1 मि०ली० प्रति 4 ली० पानी की दर से छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमान: 28.4 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 0.7 डिग्री सेल्सियस कम

आज का न्यूनतम तापमान: 11.8 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 3.0 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ० ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)